साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 51, दिसम्बर(द्वितीय) , 2018

श्वान-पुराण

नीरजा द्विवेदी

बच्चों! हम लोग आजकल दिन-प्रतिदिन सीतापुर, रायबरेली, लखनऊ आदि शहरों में कुत्तों द्वारा काटने और कई बच्चों को मार डालने की घटनायें समाचारपत्रों में पढ़ रहे हैं. तुमको यह नहीं ज्ञात होगा कि विदेशों में इस प्रकार कुत्ते सड़क पर नहीं घूमते फिरते हैं. आज मैं तुम्हें विदेशों के कुत्तों के विषय में श्वान-पुराण नामक कहानी के द्वारा कुछ जानकारी देना चाहती हूँ. इसके बाद हम लोग विचार करेंगे कि हम अपने यहाँ कुत्तों के आतंक को रोकने के लिये क्या प्रयत्न कर सकते हैं? हम लोग अटलांटा में अपने पुत्र देवर्षि और पुत्रवधू अनामिका के पास गये थे. वहाँ हमने कुत्तों से सम्बंधित जो विचित्र और मनोरंजक बातें देखीं या सुनीं उन्हें तुम लोगों को सुनाने का लोभ सँवरण नहीं कर पा रही हूँ.--------

"सामने के घर से निकलकर दो गोरी ग्यारह-बारह वर्ष की बच्चियां, कद-काठी समान- सम्भवतः वे जुडवां थीं. कटे-भूरे बाल, काली जीन्स, लाल जैकेट और लाल हेयर बैण्ड लगाये हुए दोनों बाहर आईं. उनके बीच में बहुत बड़ा, ऊँचा, काला-सफेद चित्तीदार कुत्ता है। कुत्ते को'लीश' (चमडे की बेल्ट) में बांधकर दोनों लड़कियों ने दोनों ओर से कसकर पकड़ लिया है और उसे घुमाने ले जा रही हैं। एक लड़की के एक हाथ में पालिथिन का बैग है और दूसरी के हाथ में एक फीट के लगभग लम्बा ब्रश या डण्डा है---ठीक से मैं समझ नहीं पा रही हूँ। मैं उत्सुकता से खिड़की पर खड़ी होकर बाहर देखती रहती हूं। सड़क के दूसरी ओर आते लोगों को देखकर कुत्ता जोर से भौंकता है या यूं कहिए डौंकता है--- बड़ी भंयकर आवाज है उसकी। दोनों लड़कियां 'लीश' पकड़कर जोर से चिल्लाती हैं "नो ब्लैकी"। "भौ-भौ" करने पर डांटे जाने पर कुत्ता मुंह बन्द करके 'कूं-कूं करके अपने को नियन्त्रित करने का प्रयास करता है और फिर समीप की झाड़ी के पास तीन टांगों पर खड़े होकर,पिछली एक टांग उठाकर

छिड़काव कर देता है। उसकी इस अदा को देखकर मुझे हंसी आ गई और बाइस-तेईस वर्ष पूर्व की एक घटना की स्मृति हो आई। मेरे पति उन दिनों लन्दन स्कूल आफ. इकोनौमिक्स में कामनवेल्थ स्कालरशिप पर एक वर्ष का कोर्स कर रहे थे। हम दोनों पहले तो एल0.एस0.ई0. के छात्रावास में थे परन्तु बाद में गर्मियों की छुट्टियों में दोनो बेटों को अपने पास बुलाने के अभिप्राय से लन्दन के बालहम नामक 'सबर्ब' में एक फ्लैट लेकर रहने लगे थे। उन दिनों 'समर-सेल' की धूम थी। बच्चे आये थे तो उनको लन्दन के स्टोर्स दिखाने के लिये हम लोग एक चक्कर किसी न किसी बाजार में लगा लेते थे। एक दिन बच्चों के साथ हम लोग 'लन्दन-डन्जियन' देखने का कार्यक्रम बनाकर निकले परन्तु ट्यूब स्टेशन के पहले ही एक इलेक्ट्रौनिक्स की दुकान पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'समर-सेल' देखकर उधर मुड़ लिये। देखा उन्तालिस पाउन्ड और नाइन्टी नाइन सेन्ट का मिनोल्टा कैमरा सेल में 16 पाउन्ड का लगा था। हमारे पास कैमरा था भी नहीं और बड़ा बेटा राजर्षि कैमरा लेने का इच्छुक था ताकि यहां से वापस जाकर अपने मित्रों को लन्दन की फोटो दिखा सके। हम लोग कैमरा ले रहे थे तब तक छोटा देवर्षि घूमते हुए एक रिकार्ड प्लेयर के समीप पहुंच गया । दस वर्षीय देवर्षि को हारमोनियम पर गजल गाते देखकर लोग उसे 'चाचा' के नाम से सम्बोधित करते थे। गाने का शौक उसे पांच वर्ष की आयु से था- मचलकर बोला- "प्लीज. पापा रिकार्ड प्लेयर खरीद लीजिए न। देखिये सिक्सटी नाइन पाउण्ड सिक्सटी नाइन सेन्ट की जगह सेल में अब थर्टी नाइन पाउण्ड थर्टी नाइन सेन्ट का ही है।" उस समय भारत में बाहर की चीजों का आयात नहीं होता था और भारत की तुलना में इंग्लैण्ड में इलेक्ट्रानिक की वस्तुओं का मूल्य काफी कम था। 15/- का एक पौण्ड होता था उस समय। हमने घूमने का कार्यक्रम स्थगित करके रिकार्ड प्लेयर खरीद लिया। खरीदने को तो रिकार्डप्लेयर खरीद लिया गया परन्तु उसे घर तक ले जाने की कठिन समस्या थी। पैकिंग समेत इतना बड़ा डिब्बा ले जाने के लिये न तो हमारे पास यहां कार थी और न टैक्सी के पैसे। फ्लैट समीप ही था, अतः हम चारों लोगों ने उस डिब्बे को हाथ लगाकर उठाया और लेकर चल दिये। डिब्बा अच्छा खासा भारी था अतः एक स्थान पर उसे नीचे उतारकर हम लोगों ने दम लेना चाहा। इतने में एक सज्जन जो अपने कुत्ते को लेकर टहलाने निकले थे, हमारी ओर

आते दिखाई दिये। हमारे समीप आते ही डिब्बे को देखकर उस कुत्ते ने अपनी एक पिछली टांग उठाई। "ब्राउनी" की आवाज सुनकर हम लोगों ने चौंककर देखा---तीन टांगों पर खड़ा, पिछली टांग उठाये, दोनों कान और दुम दबाये, तिरछी आंखों से अपने मालिक को देखता, सफेद-भूरा, बड़े झबरे बालों वाला प्यारा सा कुत्ता अलग हट गया था और जमीन पर कुछ बूँदें टपकी हुई थीं। वह दृश्य देखकर हम सब अपनी हंसी रोक न सके तो वह सज्जन भी हंसने लगे।

हां तो सामने लान में घूमती बच्चियों और कुत्ते की बात चल रही थी। मैं सोच रही थी कि कुत्ते के साथ में पालिथिन के बैग और ब्रश का क्या काम है? मेरी समस्या का समाधान कुछ देर बाद स्वयंमेव हो गया। ब्लैकी सूंघते हुए एक स्थान पर जाकर रूक गया। वह अपने पिछले धड़ को मोड़कर, पूँछ उठाकर, झुका सा खड़ा हो गया । दो-तीन बार उसने अपने शरीर को हरकत दी और एक ओर को आगे बढ़कर पिछले पैरों से धूल उड़ा दी। मैंने अनुभव किया कि भारतीय और अमेरिकन कुत्तों के व्यवहार में कोई अन्तर नही था। अब एक लड़की ने ब्लैकी को कसकर पकड़ लिया और दूसरी ने प्लास्टिक के ब्रश से उक्त स्थान की सफाई करके, पालिथिन का बैग बन्द करके साथ ले लिया और सामने रक्खे कचरे के बिन में डाल दिया। अनामिका भी आकर चुपचाप मेरे पास खड़ी देख रही थी। बोली-

"मम्मी! भारत में तो पालतू कुत्ते ही नहीं आदमी-औरत भी खुले आम सू-सू, पौटी करते हैं और गंदगी फैलाते हैं पर यहाँ ये लोग अपने पालतू जानवरों की गन्दगी साफ न करें तो काउन्टी वाले इन पर फाइन कर देगें। कहीं-कहीं लोग घ्यान नही देते हैं तो शिकायत करने पर उनके विरुद्ध कार्यवाही हो जाती है।" देवांश भी पास आ गया था। बोला-"मम्मी मुझे भी ऐसा ही डौग चाहिए । मैं भी उसे लेकर वाक पर जाऊंगा।"

कमरे में प्रवेश करते हुए देवर्षि ने पूछा-"उसकी पौटी साफ करोगे तुम ?"

"उसकी पौटी मम्मी तुम साफ कर देना। मेरा हाथ गन्दा हो जायेगा"-- अनुनयभरे स्वर में देवांश बोला.

“मैं क्यों करूं-” अनामिका ने हंसकर पूछा?”

“बेबी की पौटी भी तो तुम साफ करती हो--” भोलेपन से देवांश ने मम्मी की ओर देखते हुए कहा तो हम सब हंस पड़े।

जब कुत्तों की बात आ ही गई है तो क्यों न कुछ और बातों की चर्चा हो जाय। अमेरिका और इंग्लैण्ड मे मैंने देखा कि लोगों केा कुत्ते-बिल्ली पालने का बेहद शौक है। आपको सड़क पर हमारे यहाँ की तरह भौंकते और काटते असंख्य कुत्ते और पिल्ले कहीं नहीं दिखाई देंगे. यहाँ पाले जाने वाले इन कुत्तों की लम्बाई 6इंच से लेकर 6फुट तक हो सकती है। कुछ कुत्ते 6“ ऊंचे हैं, जेब में रख लीजिए तो कुछ 3 फुट से भी अधिक ऊँचे। किसी के पूरे बाल झबरे हैं तो किसी के आधे शरीर में बाल झबरे और आधे शरीर के बाल मुंड़े हुए हैं। किसी की नाक बट्टा मारकर चपटी कर दी गई है तो किसी के माथे पर साधना कट बाल हैं। किसी की झबरी लम्बी पूंछ है तेा किसी की कोबरा सांप जैसी गोल एवं मोटी। किसी की पूंछ छोटी है तो किसी की जड़ से कटी हुई।

आप सोच रहे होंगे कि जब विदेशी संस्कृति में अक्सर पूरा परिवार हौली डे मनाने बाहर जाता है तब इन पालतू जीवों के लिये क्या व्यवस्था की जाती है? एक बार हम लोग अपने मौसेरे भाई डा0 प्रेमचन्द्र मिश्रा के यहां यू0 के0 में स्कौटलैण्ड में रूके थे। दादा-भाभी हमको घुमाने ले जा रहे थे और मैं सोच रही थी कि उनकी छोटी प्यारी सी गोल्डेन पौमेरियन ‘टिप्सी’ का क्या होगा ? दादा-भाभी के बच्चे बाहर थे। मैंने देखा भाभी ने डायरेक्ट्री देखकर फोन मिलाया और तीन दिन के लिये किसी होटल में बेड एन्ड ब्रेकफास्ट बुक किया। दादा ने टिप्सी को उठाया और लेकर चले गये। आधे घण्टे बाद जब वह लौटकर आये तो टिप्सी उनके साथ नहीं थी। मैंने पूछ लिया- “टिप्सी कहां है?” उत्तर मिला- “होटल में।” मेरी समझ में नही आया पर चुप रही। संध्या भाभी समझ गईं, हंस कर बोलीं---“यहां पालतू जानवरों के लिये भी होटल होते हैं। उनके लिये भी प्रतिदिन के हिसाब से ब्रेड एण्ड ब्रेकफास्ट की बुकिंग होती है। दिन में क्या खाना देना है उसका आर्डर अलग से दिया जाता है और उसके मूल्य अलग होते हैं। जानवरों के होटल शानदार भी होते हैं और साधारण भी।”

एक दिन टी0.वी0 पर कुत्तों का कार्यक्रम-"एरिस्टोक्रेट डौग होटल" आ रहा था। उसे देखकर मैं चकित रह गई। कुत्तों के होटलों में बाकायदा एक कुत्ते के लिये एक कमरे में एक बेड था. कोने में एक टेबिल व चेयर रखी थी जिस पर बैठकर उसे खाना खिलाया जाता था। सामने एक मेज पर टी0 वी0 लगा था जिसका रिमोट बेड के पास स्टूल पर रक्खा था। मुझे यह सोचकर हंसी आ रही थी कि कुत्ते के लिये टी0 वी0 रक्खा गया है । परन्तु एक कुत्ता जब कमरे में आकर रिमोट से टी0 वी0 चलाकर देखने लगा तो मुझे अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हुआ। टेबिल पर कुत्तों को अपने साथ प्लेटों में भोजन कराते हुए तो एक-दो सिरफरे साहब लोगों को मैं देख चुकी थी। बिस्तर पर साथ सुलाते भी देखा था। कुत्तों को पौटी करने के बाद पानी से धुलाते और पोंछते भी देखा था, पर यह दृश्य मेरे लिये अभूतपूर्व था। एक कोने में कुत्तों के खेलने के लिये तरह-तरह के खिलौने और वीडियो गेम रक्खे थे। कुत्तों को उनका प्रयोग करते भी दिखाया गया। बड़े आदमियों के कुत्तों को रोटी-दूध खाते देखकर कविवर निराला जी ने अपनी सुप्रसिद्ध कविता-

"श्वानों को मिलता दूध-भात भूखे बालक अकुलाते हैं

मां की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं"

लिखी थी। यदि वह आज जीवित होते और ये दृश्य अपनी आंखो से देख लेते तो निश्चय ही एक अमर ग्रन्थ की रचना हो जाती। कुत्तों के होटल में एक हेयर सैलून भी था जहां कुत्तों के बालों को काट कर उनकी केश सज्जा भी की जाती थी। कहीं किसी टिप्सी के बाल काटकर लाल रिबन बांधा गया था । कहीं किसी जौनी की आंखों पर आते बालों की ट्रिमिंग करके उन्हें पर्म किया गया था तो किसी रूही के बालों को नीग्रो लोगों के बालों की पतली-पतली चोटियों के समान गूंथकर सजाया गया था । किसी ब्लैकी के फ्रेंच कट चोटी बनाकर हैट लगा दिया गया था तो किसी व्हिस्की के बालों को एकत्रित करके कीमती हेयर क्लिप लगाकर सजाया गया था। सिर के ही नही पूरे शरीर के बालों केा भी किसी-किसी ने अलग-अलग तरीके से सेट कराया था। एक कुत्ते के सीने तक बाल 2" लम्बे थे और सीने से नीचे, पतली कमर, व पीठ के बाल लामाओं के

सिर के केशों की भांति सफाचट थे। बालों को सेट करने के लिये कई श्वेत सुन्दरियां वहां अपने साजो-सामान के साथ उपस्थित थीं।

कुत्तों के लिये इस होटल में स्विमिंग पूल भी था जिसमें गर्म या ठण्डे पानी का मौसम की आवश्यकता के अनुसार प्रावधान किया गया था। कुत्तों को तैरने का आनन्द लेते हुए दिखाया गया था। विभिन्न स्टोर्स में बिल्ली-कुत्तों के भोजन के लिये नाना-प्रकार के टिण्ड फूड उपलब्ध होते हैं। मेरे विचार से एक साधारण भारतीय व्यक्ति इतने प्रकार के मनुष्योपयोगी व्यंजनों की कल्पना नही कर सकता जितने प्रकार के खाद्य पदार्थ अमेरिका और इंग्लैण्ड में कुत्ते-बिल्लियों के लिये उपलब्ध हैं। देवर्षि के एक पड़ोसी की पीली आंखों वाली एकदम काली बड़ी सी बिल्ली जब आकर बाहर खड़ी कार पर बैठकर अपनी लम्बी, मोटी, गोल दुम हिला कर घुमाने लगी तो उसकी डरावनी आकृति देखकर मेरी तो रूह कांप गई। हान्टेड फिल्मों में वैम्पायर, बैट, ड्रैकुला, विचेज के साथ काली बिल्ली भी जुड़ी हुई है अतः उसे देखकर मेरा डर जाना अस्वाभाविक नहीं था पर तभी बगल के ऊंची पहाड़ी पर बने, हान्टेड महल जैसे घर से काली स्कर्ट, सफेद टौप पहने और लाल स्कार्फ बांधे हुए, लगभग पचास वर्षीया एक स्त्री निकल कर आई और बड़े प्यार से उस भंयकर जीव को चूमकर बोली-"हैलो डार्लिंग, यू आर हियर। आई वाज़ लुकिंग फार यू" फिर मेरी ओर देखकर मुस्कुराकर बोली- "सारी डियर, शी इज वेरी नाटी" बिल्ली ने एक बार मेरी ओर फिर देखा तेा मैं पुनः सिहर उठी। यहां के लोगों के भी क्या निराले शौक हैं--- मन ही मन मैंने सोचा।

बच्चों विदेशों के कुत्तों के विषय में जानकर तुम्हें आनंद भी आया होगा और ज्ञानवर्धन भी हुआ होगा. अब हम सबको अपने अच्छे नागरिक होने का कर्तव्य निभाते हुए अपने यहां के पालतू कुत्तों की साफ़-सफ़ाई पर और देसी कुत्तों की समस्या पर विचार करना चाहिये.

हमारे यहां देसी कुत्तों की जनसंख्या और उनके लिये पर्याप्त भोजन की उपलब्धता न होना एक विकट समस्या बन गई है. इसके लिये यदि हम लोग अपने घर के पास घूमने वाले कुत्तों को हर घर से एक दो रोटी की व्यवस्था कर

दें तो उनका पेट भर सकता है. कुत्तों के पिल्लों को एक बर्तन में दूध और रोटी दे दें तो वे पालतू बन जायेंगे. कुतिया तीन माह में 6-7 पिल्लों को जन्म देती है. यदि हम अपनी-अपनी कालोनी के कुत्तों के टीकाकरण एवं वंध्याकरण कराने की ज़िम्मेदारी ले लें तो धीरे-धीरे इनकी जनसंख्या पर नियंत्रण हो सकेगा. कुछ ऐसी संस्थायें हैं जो इस प्रकार के जनोपयोगी कार्य करती हैं. उनके बारे में ज्ञात करके उनकी सहायता ली जा सकती है

बच्चों एक और आवश्यक बात तुमसे कहनी है. हमारी तरह जानवर भी प्यार के भूखे होते हैं. बहुत से बच्चे चाट या खाने के ठेलों या दूकानों पर जूठे पत्तलों में भोजन तलाशते कुत्तों को अकारण ही पत्थर या डंडे से मारते हैं और उनको चिल्लाता सुनकर आनंदित होते हैं. सोचो उनमें भी हमारी तरह जान है और उन्हें भी भूख लगती है और हमारे समान उन्हें भी चोट लगने पर कष्ट होता है. यदि हम उनका ख्याल रक्खेंगे तो निश्चय ही बच्चों पर कुत्तों के हमलों की समस्या का निराकरण होगा.

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें